

ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ ॐ नमः श्रीसायनाय ॥ यत्ता सत्यः
 कृणोत श्रीयत्ता लक्ष्मीकृणोत ॥ यत्ता हविस्ततो धर्मः यत्ता ध
 र्मकृणोत ॥ ॥ ग्वर्क्या सत्यदत्ता अर्क्यं सुकलक्ष्मी वसु
 लपीव अर्क्या कृणोत वायव्य वसु लपिव अर्क्या कृणोत
 वसु लपिव ग्वर्क्या कृणोत धर्मदत्ता अर्क्या कृणोत सर्वदा कृणोत
 वि ॥ ॥ श्रीधर्मो देव ॥ शालक्ष्मी कुलया लसमस्तलोकन

कुलपाल, कुसविश्वक, वायु, पूजायायवर्क, थ(धनं, कु
लपाल, मन, सुन, समस्त, साक, उ(धं, दान, काव, मविश्वकः
हर्न, गुलिचिर्न, नयं, मद, गिर्य, मरु, हर्न, गुलिचिर्न, अनगः
हाला, किणि, थूल, दवा, धल, थ(धनं, कुलपाल, ह्यन, उ(धं, दान,
काव, मविश्वक, धर्ख, कुलपाल, न, कं, दाव, प्रम, नरुय, माल
॥ ॥ धर्ग, धर्म, न, आद, सनयका, लेखा, ददा, लक्ष्मी, न, आद

गवर्क, मि, सु, नया, नि, व, ल, राव, मरि, व, ह, न, न, मरि, द, क, प्रव
धि, था, या, क, थ, व, य, न, स, स, म, थ, म, ना, ल, क, र, य, य, व, य, आ, य, न, र
स्य, व, व, ह, न, य, या, क, क, लि, वि, द, पि, या, दा, व, नि, दा, न, न, या, दा, न
य, म, स, व, क, ह, न, सा, क, म, सा, क, व, क, म, व, क, ह, न, स, न, न, य, व
व, क, ह, न, य, व, स, म, न, क, स, थ, म, र, क, न, या, व, दा, द, क, ह, न, कि
थ, य, व, स, या, ना, वा, वा, व, न, वि, या, व, र, य, य, व, क, ह, न, य, व, स, म

न कस्य मगिक ह्यं धमरुका वस न गिया व इव र्क, पाथि
 का, मिसाऊ नया आन क्रि रीद ह्य व गुलि, रुदा व या निव थ
 वम न स, वां अरु व सन, अ न ग य मा व न व मुद हा व ल सन,
 व वरु को रानि व, भा क म सा द, ग र्थ भ व सा, का क रु जे
 न म न ग र ग र, म र र, ग र, पथि द, र्क या र्क, डि या न,
 र र, व र, न न, य म र, व न अ क्का द ता ॥ ॥ ॥

कलया ल अ व मि साऊ न या ल क ध र व क न, धू ना कलया
 स क, पृथ यार व द न, ॐ क्का द व, कं दान, पु न्न रु य मा ल, ध र
 ल क्को स्य न, ध म र या द व न, ग व स या दा स क्को न, ध या र व द
 द व ध म र न ध र, ह ल क्को, कलया ल, पा प पृथ यार व य र
 न, ॐ क्का द ता, अ मा डि न क न, कलया ल स्य न, वि सा व न
 क (०) क गु लि न ग य या, मि साऊ न क्का द व, ध मि साऊ न

पारुदयकावविय अनगत्रले पुन मृत डा हा दयकाव वी
मुलिविय कल कुल मुक मास डा कि वा कूट कूट प्रमा धन
दयकाव विय रुवा ग्वर्क्या स ए दना आर्क्या कू स वान डिः
निष्ठय धर्क ल कान धर्म्या कू व न आ क्ला दयका रुवा ॥
ॐ निष्ठा धर्म ले क्ला स वाद मुनि ल कल कथ दि गिय भा ध
यश ॥ २॥ ॥ ॥ ल क्ला स न धर्म स र्क अ क्ला द र्क रु धर्म

म क्ला क ल म का वि म रु डा धर्म ज्ञा त्मा धर्म सि र धर्म
या ख ए व स ख व य न स म स र्क रा क्ला रु धि सि न व श न
सू न म रु थ धन थू का धर्म यू रु धि सि न रु र्क ॥ ३ ॥
वै वृ धि व रु रि धि व रु रु व श र न व लि स थ न न धा
व स्य सान धा ना समा द वा यू ग य ग ॥ ॥ रु नां ग थि

५
 ब्रह्मरसास्र ब्रह्मरसा विष्णुयावत्स पूयासत्र थं लूक ब्रह्म
 सा रुद्रमाया थं न रुद्र थं यत्रा कर्म ब्रह्मसा माहावित्र
 थं वित्र ब्रह्मसा व त्रिगोत्र थं समस्त उव गिया दव वि
 व उ नृ ब्रह्मसा यि थि वि मा गा थं शग शग वर्ति राजा श धि कि
 र धर्म स ख स सा द स दा द ॥ १ ॥ सुरिणी ॥ ॥ राजा श धि

५
 भागम सामहि स्तुत ॥ ॥ गुरु त्रिरूप न कि व नृ ध का
 द धर्म न ला न या व नि स्तान पृथि वि स स द न रूप न
 राजा श धि कि त या न त्रिगु स्व य नि सि गी न चि न्न न पा द
 वि स्तान ॥ २ ॥ नित ल ग र थ श धं राजा पु ति रु धि कि लं १ ध
 र्म च लु म र लू प न पृथ रा क्ति त्रि दू गा ॥ ॥ थ फा रा

स्मिन् रथायि दृष्टे ग्वक्ष्यां मद्रु इषि स्मिन् रथादु द्रववदं
मद्रु म्यवं मद्रु स्य ग्वं सुद वश कर्नं मथ्य मलु रस मन्
व्य मे ई नं वाता र सना गत्रा कर्नं स्य ग्वं त्रिभुवन संज्ञा
शशु विस्मिन् धकामा हा मा हा वृ सिद्धं ॥ २ ॥ कनरु
यान स्रु मा गाय वृ इषि स्मिन् विविध धर्म राक्षसः

पूत्रि अवला कय रि स च दाले न कि विता पन ॥ ॥ धक्क
धर्म वं नु र द अ ग कया कन अ स्य न कि रुक्मि ना पू न द
ग धर्नं द ग स्व स्य वि का नं ध द ग या क्क गयि द धा र सा
खानि क न सा हा य मा न रु या व चा द रु सि का र सा वि
ह र स नि क न सि या व ग या कु धा र सा सु व र्ण र त न

मांश धि स्त्रि न, रात्र थ सं प लू सि द्व या का अ अ क राजा
थः आ अ गु गु रूप न अ न्य ध का अ ध म्म ते च लू न रूप
न वि का र द्वा न रु या अ वि का न त स्त य द प स य या य व
ध न थ यिं च रूप न रु धि स्त्रि न राजा या कं ध म्म च लू न
रु या अ अ न ॥ १० ॥ उक्ता रा दे व रा कं यू पा सु च रु सि ना

था या अ न या थ थ यिं द द स ग या न रु या इ नो यं गिं त्र खा न यि
स या व शो नं उ लु लु ७२ ध त्रि य नि स्यं न रु ना हि मि
म लु व सु त न रु न रु न क यि न वि यि न न या या व न
या थ थो द द ग थ न ॥ ११ ॥ नि म लं वि के र्ति न वि यि न
प लं स्य वि या यि या त न द स न रु व न म्म न रा क वृ थ

ससाधुवदस्यत्य ॥ ॥ हनृथदम गायिदक्षानसा निः
 मलमलनिसिद्धिमुमिथमयिजाश्वकुत्रिखयइ ॥
 ॥ १२ ॥ एकका ~~अव~~ ~~सु~~ ता जमिकानि ससपुल ~~व~~
 सासं समजाति सूर्यकाठिसमपुल ॥ ॥ हनांगयिदक्षानसा
 मतिथानवाककयागु सर्वह्यासिं नडागक द्वाक नक्षानसा

सूर्यकानियाक कमननक्षानसा पूर्व सासियाचन्द साधु
 नजनक्षानसा ज्योतिर्यासिन्यनजथन थयिदधन दम
 हसिनायनक्षायोछानिना ॥ १३ ॥ नाजद्वानवाक वपनि
 हानपुष्पता वकस्यंदमउवनसुष्टुः न्दवाक निययवि
 न ॥ ॥ क्षमचछानन जवरखनसुरा जवन राजा याचुथ

न न प्रतया क द नं न न जा न न जिन म सिया न ग थ न ज द म
 स न या इ वि सि न न या थि न स न च न या न न या न न या न न या
 १० म स्य न न न काल ॥ १४ ॥ न न न क व र वि द वा न ध र्म य न स म
 लि न ॥ क स्या त च न न जा ना मि न ज द न स मा ग ता ॥ ॥ दं ता
 इ वि सि न ग थि द क्ष न सा स र्क स द च न क नं स थ स ल ल स

१०
 १०

म न प्र न या ता न स ता ग न क न प्रि उ व न सं न व क्ष न का व
 न या द थ थि द इ वि सि न न न न या न न न न न न न न न न न
 न न यो ध क क्ष न
 न
 १० ॥ च ल न उ वा च ॥ ॥ न न स व द स्य ज न न न न न

११

सवद सवद सवदा न स दा गा ना दा न सवद सव तेरा के सवदा
 न ॥ ॥ लि स स न न अ ह द का द न ध न का व थ दै क चं
 ११ न न क्षा न ह लि स स न स दा ना ग व स द का वा द द का क क्षी
 ॥ ॥ सा दिन दिन स जा न न रि ते ना य द चि व सु पो स स
 त दा व न जि म मि या द न ता य द चि व दा गा न दा ने या दा या

११

११

११

सवद जी उ व न न ता य द चि व ध क क्षा न ॥ १७ ॥ लि स स
 न उ वा च ॥ ॥ अ थ मि स द स अ यि ना उ क न स दा
 त्या दिन उ ज न क न क दा ना नी श की स्त्री न स म छि र ॥
 ॥ ॥ ध म य उ न न क्षा का द न ध न का व लि स स न क्षा न
 य स या दा न स वि स न य नि स दा न वि य री ज न क

१२

रुचा धवा फल पनिसु दान विच याख मइ जिक संथा
मइ धकं रिम स्य न धन ॥ १९ ॥ च लु न ड वान ॥

१२

मयदा कयना जा धु विवा कवदा मय ह शवि सिन अ
गता दान सा लाया पति मरुका ॥ धर्म य लु न न
धान ह म हा ना ज रुत या ग स्य ता क योग क थ न द

१२
१२

अर्थ नाक थउ व धन नाय रुय दि रु दि व्यास
राव थ धन थ का दि थ न जा या दि र्य लु न व या न ना
य रुय जि या सि न रु य नि र्य लु न रु य रु ध क व
म र्य लु न न धान दि न य पि भा ग य व रु म इ ॥ २० ॥
रि म स्य न उ व रु ॥ वा धन रु मि र्य स ग ड ल

१३

अशुभयकं यत्नानि वृद्धि न स्यात् कथं दृष्टान किं
रुधेन ॥ ॥ हिमस्य न नक्षत्रं ह्यशुभं यथा जातं यथा

१३

रुद्धं क्षीयसा वा द्युलं कृषिं यत्नं गृहं यथा जातं न
यथा स एव जह्या नृपय निधमं यायि वप निधमि स
न आहूय सा वशं दत्तं यत्नं यथा वा द्युलं नक्षत्रं यत्नं

१३

१३

यथा यथा जायते दानं विरय जा ग्य रुया वशं दत्तं नृप
जा ग्य रुया वशं दत्तं नृप जा ग्य रुया वशं दत्तं नृप
पिया निरु ॥ २१ ॥ यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं
नृप यदि स एव नृप यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं
हिमस्य न नक्षत्रं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं

१४

या यशस्क विवाहा उगाउता न नचा दा कव दशि भा ल निरु
नडा यशु उगाउता न नचा दा कव दशि भा ल निरु
मनस नरु नचा या उवाच ॥ २२ ॥ वञ्जल उवाच ॥ ॥ हिर्मग्वया १४
यं छागत्र संधा स्यान विजियत तस्य नृप स्यान विजित ॥ ॥ धर्म १४
वञ्जल न धारु हरीम सन कलपाल सन किक्क कलययात सकल
संजि उगाउता ॥ ॥ प्रज्ञा खाला न्याप्याल उनिमषला ॥ २३ ॥

॥
हीम सन उवाच ॥ ॥ वकन न्वी न्याप्याल उनका काक नृगमल म
चहकि मद्यपन उदासि दुगलिव नालल न्यागगन चला दिपा
नय कग न्वन विवजियत ॥ ॥ हीम सन न न्याप्याल दय फल नृनदु १५
खं हा वञ्जल न न्याप्याल उलक काख धल म स कि सि रु सि हा
ला न्वि उाहम नृप मगल पं पि हा लख सवाह पं नि नसा उनय म
इ सुकल्य गथ उदयि उावर्क धाया उा ॥ २४ ॥ वञ्जल उवाच ॥

निह कवि सुसन्नन स्य कल्याः वासास मर्क सुखइ ४ ख मलम नुया
 पञ्च ४० दिय मर्क नत्य कथं वरु वरु वरु वरु ॥ ॥ धर्माच्च
 अलन भालं ससात्रया लोहि सुखइ ४ ख वि चो जाउा थं सकल सउ
 निहागा ४० दिय उमि गान प्य वरु भाल थग थरु यिउा ॥ २५ ॥ वंभु
 लउवाव ॥ ॥ उने भूयग भवनव उा कृत घ्वा नृष ना गी नीव ला
 ना कृत वंभु ना गानि वास ना पंचाम ॥ ॥ धर्मव भालन भाल ह

१७

१७

पहारा ५ हीम सन व भाल भय गवध ६ उा गु नू ०० या दिन नून कति
 लना या क नृ कि पृष ०० ल निष्ट क्क राउा नृ थ व थ का व भाल भ
 या ॥ २६ ॥ गी र्ध भव वृथ उ स्य यदा ज स्य यदा मूर्ख कियो हि न स्य र्ध वि
 पासा पि व भाल उ वरु ॥ ॥ हन गवध न भाल सा वा न न र्ध या उा था
 इ नृ सा पा ल र्ध भ म या क नृ कि नो कर्म म स उा नृ थ न या न व भाल भ
 य ॥ २७ ॥ हन हृ वि विना यु का पादा पत्र कत विना नृ नि वि द उा वि

१७

६ स्वसापिच भुल उच्यते ॥ ॥ हर्षं च प्रकलसा वाक्मनश्चाभा
 उ हाऊन येया न दामेव उा दुनि मासिक सिध वासिहय मद्वा उा प्रहा
 लिउ खदान द्या मड प्र उा थ प्रव भुल धाय ॥ २८ ॥ कविनादि त्रया
 नन वाक्म नि गमन चन वेदा कन विवा यन स्वपिन च दान उच्यते ॥ ॥ १५
 हर्ष गति हक्कल सा सिय साया इगा हा उा वल प्र निव की दया क
 बंद सा सु विवा यया कन व भुल धाय मड ॥ २९ ॥ कसनार्त्त मृग कस्य



मिह गृह पृहा ऊर्न ॥ ॥ हर्ष हविता गा विचा सापिच भुल उच्यते ॥ ॥
 महा इ ४ स्वसिया उा साकन कया उा वा हन या क सिफ या क स हाऊन
 या उा नन गव सु वल न का उा प्र थ प्रव भुल धाय ॥ ३० ॥ मड महि
 कर्मिक वन अ मि या दा हय गव रु पि या गन सापिच न्दा ल उच्यते ॥ ११
 ॥ ॥ कसि इ इ उा क गृ लि हा कन गुप्त मव या व सु क स मि न ल
 हा उा प्र र मि स गा उा व सु स्य न क प्र की प र प ॥ ३१ ॥ मि व द्वा उा प्र

थन्नच अलक्षय ॥ ३१ ॥ मातुयपितृन स्वैव वरुषुषु इव लं सुत
 प्रानुस्यन् पृथुस्यपि वन्द्य उच्यते ॥ ॥ हन्वन्वन्न भाले सा माम
 ११ वव् स्नाद्धिर्न श्रेयं वलस वलमदन्तहा लपाडा इव विडाश्र काय ११
 जाग ववन्त मामन वलस महास मस्यस्य मथ्यकस्य यथ कुर्य कृतडाश्र ११
 थन्नच अलक्षय ॥ ३२ ॥ गजहस्ति कदा ना शु रुसक्तु मे धून स्येव च का कि
 रकसी त्तानं सापि व अल उच्यते ॥ ॥ किं हि पाते मा नून उहलन

गृहसागता सापि रक्तै च रक्तै र्थ सापि वन्द्य उच्यते ॥ ॥ तापालेन
 उा उवाश्रन्त इल सा संन्यासि इल सां मव इल सां आदन्त मया स्य नि
 डाया यिउ रिक्ता कान म वि यिउ थन्नच अलक्षय ॥ ३१ ॥ साकर्म
 नदा गाव दगाव दाना लाघनि म द्दुर्क निना स्वपि गता श्रन्त स्वपि व
 अल उच्यते ॥ ॥ असा ज्ञान फलानि उा रागिनि त महापूतृ पपनि
 सन् वचन या उपनश्य ह् थगुलिनि दानयाय भाग्य कयात

१२

दानयाय ग्वगुलिबालसौ उगुलिरुनिकद्र विद्यमाल न्नासापनवा
 वयायमाल सानधमयाकनच भुलेवय ॥ ३८ ॥ नथमनवस्यमास
 नात्रिमुकावगुदिनि मन्वहयापहाइत्रिच सापिचभुलेउचन ॥
 व्यालागुलाप्यथसदडा ममसाडा पसंगयाकन ननमनकनडा
 मन्वाययडा मन्धमध्यावभुलेवय निद्रवभुलेइल ॥ ३९ ॥

१३

१४

निथसुस सानयादरुन लक ॥ मनुदितन आदुतिविद्या
 उहहाम मदयकनु विथयान दिममिसा कायान धत्य
 नद्रसुत्रलसयाव ॥ ४१ ॥ नकुतावाथमाजाना सुनिवा
 सानसकल अस्वमध्यापिगन्द स्पकनकयाय नमध्याति
 ॥ ॥ नवलचा रुनिमा विद्या इरसा रुइरसा अस्वम
 उहया गन्दनरुयाथग्रह थदावनकनास सकलसुवशयिन

१५

२२
 थुनिवददाव्, हिमस्यतन, इधिल्लीनकन, झाकृषकन
 थनत्रि, इधिल्लीनउंथमविद्यादाव्, उंदात्रयाद्वनमशुधि
 स्त्रिननकारं ॥ ग२ ॥ इधिल्लीनउवाच ॥ ॥ कथंउत्थयल २२
 धर्म कथं धर्मसर्वरुत्थ, कथं चथाय्यल धर्म कथं धर्मनि
 नत्थति ॥ ॥ गथधर्मदयन्, गथधर्मथिन इधिन, गथ
 धर्मतय, गथनधर्मरुनविद्यन्धकं क्षयाव् ॥ ग३ ॥ जनि

थउवाच ॥ सत्यउयद्यलन, धर्मदया धर्मसर्वरुत्थ, कुमार्यांथ
 यल धर्मकेधधर्मविनत्थति ॥ ॥ सत्यनधर्मदयन्, दयान
 धर्मथिन इधिन, रवमानधर्मतय, क्षाधन, धर्मरुनियन्धकं
 क्षयाव् ॥ ग४ ॥ इधिल्लीनउवाच ॥ ॥ कावामिउवदत्थ
 यंकावामिउं गृहं यन्, कावामि उगुय, यंकावामि उ
 न्तालकं ॥ ॥ यनद ॥ यामिउं यन्, यंकावामिउं

३०

ना गयामि नु नम्र, सियु व न या, नु स ॥ ३१ ॥ अनिथ उ
वाय ॥ ॥ विद्या विद स्य च, लक्ष्मि गृहं वृ च ज्ञा नु न
स्य इव धर्मं मृ नुं ज्ञा व ना गृ य ॥ ॥ य न दं गयामि नु विद्या क
यामि नु मृ, ना गी या मृ नु उ अ धि, म ल न या मि नु धर्म ॥ ३२ ॥
इ धि मि न उ वा च ॥ ॥ क थं उ त्थ य त्थ स मि थ क थं ॥ स मि
नि य द य न ॥ ॥ ग थ न क या न श यि ण, ग थ न क या न य क

३०

द रि ण नु न क या न न नि व ध कं क रं ॥ ३३ ॥ अनिथ उ वा च ॥
व द्म ध क ल्या न द य क ल व द्म न क ल्या न वि ने, व द्म या ज्ञा सि
या न थि न श य ज्ञा व कं धा यो व ॥ ३४ ॥ इ धि मि न उ वा च ॥
॥ च ड ग म स या नु य न्म, स र्थ य स या नु य, न्य, क्क या ध र्म द य ण
ध कं क रं ॥ ३५ ॥ अनिथ उ वा च ॥ ॥ च ड य न ग ल क रं
य न्य, द ग ल क ल वि स थ, क थ नि थ नि य सं ग न, गृ ह न क स

३१

३१

हस्रव॥ ॥ चंद्रमसस्तानयादानतत्रिचिद्ययन्याकसूर्यग्र
 ससजिद्यनत्रिचिद्ययन्याकतिथसकनियन्याकसूर्यससत्रिचि
 दयन्याका॥ १० ॥ इतिस्मिन्नउवाच॥ ॥ किंयन्यशसूना
 साननगंगस्तानवीकरुनागयायिषुयुदायनव्यम
 त्याज्जित्त्यवर॥ ॥ जसूनास्तानयादानकुरुतनागममत्तिस
 होमयादनकुरुयन्याकगंगस्तानकुरुयन्यागतैरुहृत्तवि

३१

३१

त्रगयाहपिलुथयानकुरुनविनधकंधराव॥ ११ ॥ अतिथ
 विनधकंधरा॥ उवाच॥ वानासामहापुनंजस्रिदिआसाच
 निसलं गयायिषुयुदायनवीतिस्मृत्तययकृतिपुनूचक्रिया
 लसधंति कुरुजितिक्रितिकनकं ममत्यामगिमागुश्रसायना
 गयगवति॥ ॥ महापुन्यवानासिआसानित्सलशतसागया
 सपिलुथयानविनगगस्रुनननिवपुन्ययादानकाति

३२

यका तल्लुपिनिश्रुता स्वमति सति न हा मया दान का धिति
 यका तल्लुपिनिश्रुता स्वमति सति न हा मया दान का धिति
 ३२ यिथौ ना गृहं ना सि माता ना ~~पिता~~ सि ते थ व र लाना ले ३२
 गि क थं चै वः सुख नो नि गृहं य ले ॥ ॥ गव क या चै स ३२
 माम व व म दयि व द दा कि जा म द य न ध द या चै स ग
 थ सुख दयि व व क क्ष या ड ॥ ॥ १३ ॥ अ ति थ ड वा च ॥ ॥

वृ वि ॥ व वि मा ता पि ता ज स्य वि ता ज्ञ म व रा च चै न द स जा स
 हा द लं ज स्य सु र्वं सु नि गृहं रु व त ॥ ॥ माम व व म
 इ क्ष या मा म व व ह न व द्वि द दा कि जा म इ क्ष या रु मा ३३
 क या सु र्व क म ल व क क्ष या व ॥ ॥ १४ ॥ इ धि सि त ड वा च ॥
 ॥ क न क र्म म ह हा इ र्वं क न क र्म म ह सु र्वं क क न
 क र्म रु व ग र क न क र्म सु व त ल ॥ ॥ कृ क र्म न म हा इ

३३

स्वीशुल्लुक्कर्मनमहासुखिशुनल्लुक्कर्मनगर्हवासुशन
 ल्लुक्कर्मनउत्थंउत्थंयुननग॥ ११॥ अतिथउवाच॥ ॥
 दवयुजाकनवनपुन्यमहाइस्वर्जनेदाननकनव्यंतेनग
 रैयनयन॥ ॥ दवलहिलेवमदयानदस्वीशनजने
 दानमयादावगर्हवासुशनयनयाम्नीयनयुस्वकाया
 नज्ज्याननलकवनधक्कयावचनवानाहाशुस्वशेताःह

३३
 ३३

३४

नदवमानययायुजसत्यवनशुस्वधर्मवक्तशुध
 क्कमनयतात्वायुवसुखिशुयावचानिवेशता॥ ॥ १५॥
 शिधिलिनउवाच॥ ॥ कलिजंशुनमाकासकलिंगम
 ननानकाकथंमयकृतंद्वाक्षताकलितसुवसुधना॥
 ॥ अकोससुताजुनिदतअकोससुतनिनकुदत

३४

मय नरु त्रिनेत्र खन दत्त धयिथि विसुवत्र कुदत धकं
 ॥ ११ ॥ इति स्त्रिनेत्र उवाच ॥ मातुष्य यदि वा कन्यपिताज
 ३४ स क माल कवा द्वि वा क्यः ॥ इत्युक्त्वा कस्य दह स मय हव्य ॥ ३४
 ॥ यद्वय मा मा स दत्त ग्वय मा वय दत्त ग्वय मा स नि ३४
 इत्युक्त्वा पुनि शन जिक न्य माल धकं क्षयान् ॥ १२ ॥ जनि सु
 उवाच ॥ चतुर्न शु ल मा का स द्वा यो ग गत ता न का द स

क्षात्र यवत स मया साधं न यर सु क्षात्रा ॥ ॥ आ का स य ता ज
 रु दत्त उ का स स न ग ति नि ग्व दत्त मय न न्वा मा क ल न
 वि क्षा न जि क्षा न ध न यि थि वि सु कु लो द न ध कं ॥ १२ ॥ ज
 नि थ उ वा च ॥ ॥ इति न स क्षा ज य न ल का थ म क्षा दू ता स
 न इ ग्व म क्षा य न य व क्षा न य व स जि वि ना ॥ ॥ हा म न स
 ग थ यि क न दत्त सि स मि ग थ क्षा न इ इ स ग थ ध न व न थ य

३७

न ह्यनरक्षितः ॥ ५० ॥ इति स्तुतवाच ॥ ॥ जगदीश्वर
यनाया दयज्जतिर्यथोत्तरे ॥ जह तावृक्षं त्रिविधा ॥ जगित
स्य गृहं मम ॥ ॥ हो मया दाय न सुखं ददन्नित यज्ञाया
य ह न जिह्वं सत्थ न नाडा गथ्या य मान धक क्षाया न ॥ ५१
॥ अति स्तुतवाच ॥ ॥ न च पूर्व तय लुका क द न क पूरा
जन राज गृह न उक्त व दाया था च विवजित ॥ ॥ द्वाया

३७

गृह न त जिह्वं न क मडा या मय या क मनया वि स व न रा
जा या च सु म स्या ने जिह्व गिति मय मन या न इ व न म
इ ध क ॥ ५२ ॥ क न दा य न रा न य वि ना दा य वि व जि ग
स ह स वि ज् थ सि नां ज लु न व गृ ह म म ॥ ॥ जि ह्वं स च्छु इ
४ ख न द या डा मन या वि व ना दा य स च्छु न ग थ मन या ध क
धा या डा ॥ ५३ ॥ अति स्तुतवाच ॥ ॥ गति व मा हि ल म

३८

३५

या न च तिथि ति ला ७७ ना ते ना कं माहि नं मा या सुखं सुख न च
विषय ॥ ॥ गारु सं मा या न मा रु या द न त न ॥ ॥ व स म
या द मा या न स म म क या ना न स आ ह्म न या क ह म हा ना गानि
च य न थ व स ल स ल व क ॥ ७४ ॥ ग्रा ज्ञा य ति ग्र हं धा ल वि व स्या द
स य मां यू त मा सं व लं हा का न च ज य ग ह ॥ ॥ ग्रा ज्ञा या व
ति ग्र ह का य म हा ज्ञा नं य स या स वा न थं का य या ना न य

३५

रि क य ति ग ह का य म लि द ॥ ७७ ॥ न या चा ज ये वि
ल स म ड या य य न्य त य ग ह म न स्या न स ज ल वि द्रा ग्रा र्थ म न
सू ध ल द स स्या न सा च रि द ग य ज स मा ध र द ग व स्या म मि नी य
॥ ॥ वृ सि ध न स म स म न का व स मू ड सं व नि ज धि नो ॥ थ न स म
स या य मू दा व ग्रा ज्ञा या र्थ स ज नि ज थ ल या नि मी स्मि न जि न
च न क म न या अ वि य नि स न न या ज न म लु न जि न ज

३७

३१

न कुरु व जितसरुया जी कृषिवाव मिसाचु क उति
मि कृमिसा ज कृ कृ अनाति मि ज नडा उति मि कृ अनाति मि ज
नव कृ कृ यस्या उति य स्या मि कृ व ना शाचु क उति धर्क क
न ॥ ४७७ ॥ इति धर्म पुरुष विद्या संकाता सर्वनयति गतात्यवग
ह सर्व नयति यति आ कृता गता सह सयि य स्या मथ माना शेषि
हि नयि रसा मान गता गता का धना कृतय दयत ॥ ॥ इति महा

३१

३१

गज इ श्री मित्र ददा नव न पात्र विज्ञादू न संवा वाय म
मान चूल पात्रा इ द पात्र नया रया कृ सनि लानि ल वा क
न इ स उ दाना कृ इ वा कृ नव नव जित म मचा या क ॥ ४७८ ॥
॥ इति मित्र उ वा य ॥ ॥ ज ह विधु सन कि त्या सव विद्यु
ह गत सो ध च वि ~~वि~~ जी उ व कृ थ म वि प्र य कृ त ॥
॥ ज ह विधु सन या या त न व कृ थ श ना ध सक र्य वा क

३४

३४

नयनिमखता दाव सा धकस ठवक्क गय ध क धारी ॥ ४५ ॥
 सागला क्रियसकम्भ विथम् विथिय रुचिरु लत आत्मनेय
 जजा माना इ विस्मि न ॥ ॥ धरंदात्र जाति न त मनख द्वाक द्वाव
 जि न यानं उतिष धु द्वाव ग थ या य सिंह न य म जि न व क चि न
 सहा न पुल ॥ ४६ ॥ चंदात्र जा मि मा जाल स ता यं स ल रा यि न
 सं सल रं व ला व न त ग ह ह ह व त था या धि क्क जा ग द्वा न य

३४

३४

लूह थ्मा क ग ती य द्वा द सु व ष सं व या य सर्व च निरु र व ॥
 ॥ धरंदात्र न व सि न्य रु या दा व क र्म या य श क्क नि द्वा ता ना के व
 ग थ या य सं सान स म इ थ थि द्वा व ग थ या य या यि क्क द्वा न स
 दा द व ना य लूह थ्मा या क द्वा थ जि म नि द द ता जि न ज ह
 या दा न स म स नि रु न या ता न व कं धा ना व ॥ ४७ ॥ जति
 थ उ वा च ॥ ॥ जूह न्य व न या पि क्क जू न्य ग या या य क म्भ

३४

३४

३२

लहवक वयनित्यागि सा यापिष्ट नराधिव ॥ ॥ जी यापिष्ट
मव ज्ञानाग कर्म सादानं हा ममयाक साद्व मयाक ध्वम्
राजा यापिष्ट क्षय ॥ २१ ॥ पुष्पवि सं दृ सवाक् विव
दयत् स ए म ए मया उ कं मम दाय न दियत् ॥ ॥
जव स न स्यात् जि न झा डा ग थ निस्त्रि स नान् ज
थं न ना य या डा नि निरय न यानै द ध्वम् य जि इ

३२

३२

ष वृ न म इ ॥ २२ ॥ आ या धि का ति कि चे न् मा द्य वे सा
थित था स ता न दा नं न क न र्वा सा या वि वि द्वा न रा धि य
॥ ॥ आ या रु या यू ल् मा सि कू दू उ जा वा रु न रु रा यि
व का ति क यू ल् मा सि कू दू कृ ति का न रु रा यि न् मा द्य
या यू ल् मा सी कू दू म य न रु रा यि न् थ ल य व त रा क र्वा
न स स स्ता न दा न म या यू न् थ द्वा ना जा या वि स्त क्ष य ॥ २३

४०

॥ इति स्मिन् उवाच ॥ ॥ त्वं च पूर्वमया दत्तं विना त्वं च पूनः पुनः ॥ ममे
उरु विथा कथा ॥ त्वां स रुतं लब्धं न ॥ ॥ हं नूः श्वरं दत्तं तं जि
नं नृपयात्र दत्ता वांति स्यां विचारमया दत्ता ॥ चि नं जि ज ह्व य था नै यो
जि ज ह्व स ह न या दत्ता व जि न दृश न वि च ॥ मान व कं क्ष या व ॥ २
४ ॥ मया पूज च सा द्व च त्वं दत्तं अति र्थं ह्व य त् ४ अ य म्य स रुत
ज ग्म स स म त्वं लं च द ग न ॥ ॥ जियू जा सा ध सं कृ न या न अति

च यिता य उ स त्वं म व इति स्मिन् ॥ ॥ हं महा राज इति स्मिन् च न
व वृष म्मि जिव व क्त्तु सु म स सा स म या व चान च ॥ नि च य न का य
क्त्तु व वृ जिव व क्त्तु ध कं क्ष या व ॥ २७ ॥ त्वं या किं ति म यं स त्वा ॥
गता हं ॥ गृहं ग व ज सा ल्ये ॥ ज ह्व पु न्य च अ हं द वि इति ॥
स्मिन् ॥ ॥ कृ न किं ति य ता य स द दान ॥ कृ न क्त्तु या दत्ता न स जि व य ॥
अ कृ न ज ह्व या नौ न ज व क्त्तु या द व जि थू का ध कं ॥ ध म्म त जा ह्व

ॐ

दयकत्रा ॥ २२ ॥ शिखिराववाच ॥ ॥ जयंम्यसुननंयम, ज
शम्यसुननंयवत् ॥ जयंम्यसुननंयवत् ॥ जयंम्यसुननंयवत् ॥ जयंम्यसुननंयवत् ॥
॥ जिज्जसुश्याय, यनितसाहनशन, जिज्जसुश्यादाया
साहस, यनितजिनुनागा, जिनाय्यासुनननागा, जिववृद्ध
सविष्णुदाव ॥ १०१ ॥ ॥ ममजसुहृद्वयन्य, जदवादेसुहृद्वय
सुसवयायविनिमर्क, गहसादवतागुन ॥ ॥ जिववृद्ध

३२

५२

४२